प्रो० रामनाथ शास्त्री : एक विलक्षण व्यक्तित्व

❑ डॉ० सत्यपाल श्रीवत्स

भारतीय संस्कृति तथा डुग्गर संस्कृति के समन्वय रूप और डोगरी भाषा और साहित्य के पुनरूद्धारक पुरोधा प्रो० रामनाथ शास्त्री जिनका 8 मार्च 2008 को स्वर्गवास हो गया था, अब डुग्गर धरती के एक ऐसे इतिहास पुरुष बन चुके हैं, जिन्हें आने वाली पीढ़ियां सदा आदर के साथ स्मरण करती रहेंगी।

मेरा स्व० शास्त्री जी के साथ परिचय 1954 ई० में डॉ० गङ्गा दत्त शास्त्री 'विनोद' के माध्यम से हुआ था। उन दिनों मैं शास्त्री (संस्कृत)और प्रभाकर (हिन्दी) परीक्षाएं उत्तीर्ण करके नेशनल मिडल स्कूल जम्मू में अस्थायी रूप में अध्यापक नियुक्ति होकर अध्यापन कार्य कर रहा था।

उनके साथ प्रथम परिचय से ही मैं उनके आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित हो गया था। वस्तुत: उनका व्यक्तित्व ही ऐसा था जिससे कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। वाणी में अद्भुत आकर्षण भरी मधुरता लम्बा और प्रौढ़ता सम्पन्न शारीरिक गठन और उसके साथ गाँधीवादी पहनावा सच-मुच एक विलक्षण समन्वयात्मक रूप था उनके व्यक्तित्व का।

उन दिनों यद्यपि डोगरी संस्था अपनी बाल्यावस्था में थी, परन्तु शास्त्री जी उसके संस्थापकों में अन्यतम होने पर भी उसके संवर्द्धन एवं पनपने में सर्वप्रमुख भूमिका निभा रहे थे। यही कारण था कि उनके सम्पर्क में जो कोई भी किसी भी प्रकार के लेखन में रुचि रखने वाला आता था, उसे वह डोगरी संस्था के साथ जुड़ने की अवश्य प्रेरणा देते थे। स्पष्ट है कि इस प्रकार वह वास्तव में डोगरी के पुनर्जागरण के आन्दोलन के अग्रिम प्रेरणास्रोत एवं अग्रदूत बन गए थे। उनके उस कर्मठ एवं निष्ठावान् व्यक्तित्व से ही प्रेरणा प्राप्त करके कई हिन्दी में लेखन कार्य और कविकर्म में अपनी गहन पैठ बना चुके कुछ युवा साहित्यकार डोगरी में लिखने के लिए प्रेरित हुए क्योंकि उन्होंने शास्त्री जी की प्रेरणा से डोगरी में लिखना अपनी मातृभाषा के प्रति और डुग्गर धरती के प्रति अपनी देनदारी से मुक्त होने की भावना के उजागर होने से ही प्रारम्भ किया था। वैसे शास्त्री जी स्वयं हिन्दी तथा संस्कृत के प्राध्यापक होने के नाते तथा उनके डोगरी संस्था के अन्यतम संस्थापक श्री धर्मचन्द प्रशान्त भी हिन्दी तथा डोगरी दोनों भाषाओं में निरन्तर लिखते रहते थे। शास्त्री जी की प्रेरणा से प्रिन्स ऑफ वेल्स महाविद्यालय में उनसे पढ़ रहे उन के हिन्दी कविओं के रूप में प्रसिद्ध छात्र वेदपाल दीप,

केहरि सिंह मधुकर और यश शर्मा आदि सबसे पहले डोगरी संस्था के सदस्य बनकर डोगरी में लिखने लगे थे। उनके बाद धीरे-धीरे और लेखक और कवि भी डोगरी-आन्दोलन में सम्मिलित होकर शास्त्री जी के कुशल नेतृत्व में साहित्य-साधना करने लगे। उन में पं० संसार चन्द्र (प्रसिद्ध चित्रकार), पं० दीनू भाई पन्त तथा भगवत् प्रसाद साठे जैसे वरिष्ठ साहित्यकार भी थे।

मैं जब उनके सम्पर्क में आया तो उन्होंने मुझे भी डोगरी में लिखने के लिए मात्र प्रेरित ही नहीं किया अपितु डोगरी संस्था का सक्रिय सदस्य बनने की भी सलाह दी। उन्होंने मुझे पहली बार डोगरी संस्था में ले जाने के लिए चौगान फत्तू में धनिराम (धन्ने) की पान-चाय की दुकान पर सायंकाल के समय किसी भी समय मिलने के लिए कहा। मैं तदनुसार एक दिन वहाँ पहुँच गया और चाय का कप लेने के बाद उनके साथ पक्का डंगा में स्थित डोगरी संस्था के कार्यालय में पहुँच गया। वहाँ अनौपचारिक कवि गोष्ठी में वेदपाल दीप और केहरि सिंह मधुकर आदि की डोगरी कविताएं पहली बार सुनकर मैं बड़ा आनन्दित हुआ था। वहाँ से जब मैं शास्त्री जी के साथ ही बाहर निकला तो उन्होंने मुझे भी डोगरी में कुछ-न-कुछ लिख कर अग्रिम सप्ताह में संस्था के कार्यालय में पढ़ने के लिए प्रेरित किया। तदनुसार मैंने 'डोगरी लोक गीतें च विरह वर्णन' लेख तैयार किया और एक औपचारिक गोष्ठी में प्रस्तुत किया था, सौभाग्य से वहाँ उपस्थित सभी साहित्यकारों ने मेरे उस पहले आलेख की प्रशंसा की थी। उसके बाद यद्यपि मैं शास्त्री जी के सम्पर्क में निरन्तर रहा, परन्तु अपनी कोई डोगरी रचना डोगरी संस्था की साहित्यिक गोष्ठियों में प्रस्तुत नहीं कर सका। कारण था इण्टर मीडियेट की परीक्षा की तैयारी में मेरी व्यस्तता। उन्हीं दिनों में नेशनल मिडल स्कूल से त्याग पत्र देकर सनातम धर्म कन्या विद्यालय जुलाहका मोहल्ला में आधे समय के लिए नियुक्त हो गया तो विद्यालय की प्रबन्धक समिति के प्रधान पं० परशुराम नागर ने मुझे गाँधी भवन में रहने के लिए एक निशुल्क कमरा भी दे दिया। नागर जी उन दिनों गाँधी भवन निर्माण समिति के प्रधान भी थे।

मेरे वहाँ पहुँचने से कुछ ही समय पहले नागर जी ने भवन के प्रथम तल पर बड़े हाल के साथ वाली गैलरी में पं० संसार चन्द्र तथा प्रो० शास्त्री जी आदि के कहने पर डुग्गर की प्राचीन कलाओं का संग्रहालय-'डोगरी आर्ट गैलरी' नाम से स्थापित करने की भी अनुमति दी थी। मैंने गांधी भवन में रहते हुए इण्टर मीडियेट की परीक्षा की गम्भीरता से तैयारी आरम्भ तो कर दी और प्रो० घनश्याम (प्रिन्स ऑफ वेल्स कालेज-अब गाँधी मैमोरियल साईंस कालेज में रसायन विभाग के अध्यक्ष) के कहने पर तीन अंग्रेजी के प्राध्यापकों की कक्षाओं में भी सम्मिलित होने लगा तो भी ''ग्लिम्पसेस ऑफ लाईफ'' (Glimpses of life) नामक निबन्ध पुस्तक के कुछ निबन्धों की कठिन भाषा समझने में कठिनाई अनुभव करता था। मैं अपनी समस्या लेकर पुस्तक के साथ प्रो० शास्त्री जी के घर जाकर उन्हें मिला और उन्हें अपनी समस्या के अवगत कराते हुए प्रार्थना की कि किसी अंग्रेजी के प्राध्यापक को कहें जो मुझे

अपने घर पढ़ा कर मेरी चिन्ता दूर करे। उस समय शास्त्री जी यद्यपि अपने घर के प्रधानद्वार के पास वाली बैठक में बैठकर कुछ लिख रहे थे, परन्तु उन्होंने अपना काम छोड़कर सहानुभूति के साथ मेरी बात सुनी और मेरे हाथ से पुस्तक लेकर उसे आद्योपान्त सरसरी दृष्टि से देखा और फिर कहने लगे–पुस्तक कुछ दिन मेरे पास छोड़ जाओ। मैं इसे पढ़कर जब डोगरी आर्ट गैलरी में शाम को आया करूँगा तो सीढ़ियां चढ़कर ऊपर जाने से पहले आपको थोड़ा-थोड़ा पढ़ाया करूँगा। उनके आश्वासन से मैं निश्चिन्त होकर जब लौटने लगा तो उन्होंने मुझे आग्रहपूर्वक बैठाकर अपने साथ भोजन करा कर ही लौटने दिया। मैं उनके प्यार भरे आतिथ्य एवं सहानुभूति से भावाभिभूत होकर ही अपने कमरे में लौटा था। तदुपरान्त अपने आश्वासन के अनुसार जब उन्होंने मुझे उक्त पुस्तक गाँधी भवन में आर्ट गैलरी में जाने से पहले मेरे कमरे में आकर नित्य पढ़ाकर कुछ दिनों में समाप्त करवा दी तो मैं उनके अंग्रेजी भाषा के ज्ञान से भी बड़ा प्रभावित हुआ था। उसके बाद मैं उन्हें गुरु ही समझने लगा था, इसीलिए अपनी कोई भी निजी या शैक्षणिक एवं साहित्यिक समस्या लेकर उनके पास जाकर उसका समाधान पूछता था, जिसका वह यथासंभव उत्तर देकर मुझे आश्वस्त करते थे। वस्तुतः उनकी बातों से मुझे बड़ी प्रेरणा मिलती थी।

प्रो० शास्त्री जी की सत्प्रेरणा का अक्षुण्ण प्रभाव मेरे बौद्धिकस्मृति पटल पर सदा विद्यमान रहता था। जब स्व० श्यामलाल शर्मा जी की प्रेरणा और आमन्त्रण से 1966 ई० में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन के अलिगढ़ विश्वविद्यालय में आयोजित किये जाने वाले अधिवेशन में सम्मिलित होने की तैयारी प्रारम्भ हुई तो वहाँ भाषा विज्ञान अनुभाग में प्रस्तुत करने के लिए 'डोगरी और पुन्छी भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक से एक विस्तृत आलेख तैयार हो गया जो मैंने सम्मेलन के भाषा विज्ञान अनुभाग में प्रस्तुत किया था।

जब ग्रीष्मावकाश के दिनों पुन्छ से जम्मू आकर अपने गाँव जाने से पहले मैं प्रो० शास्त्री जी को मिला तो मानो हमारा सम्पर्क पुनः जाग्रत हो गया। उस समय उन्होंने मेरे साथ डोगरी रिसर्च इन्स्टीच्यूट, कार्यालय (श्री रघुनाथ मन्दिर परिसर) से परेड ग्राऊण्ड तक पहुँचते-पहुँचते अनेक प्रकार की साहित्यिक चर्चाओं तथा डोगरी संस्था की गतिविधियों के बारे में बातचीत करते समय मुझे गाँव में जाकर डुग्गर की ग्रामीण कृषि शब्दावली एकत्र कर उसी पर शोध करके डॉ० अम्बा प्रसाद सुमन के समान पी० एच० डी करने की प्रेरणा दी। उनका कहना था कि क्योंकि सुमन ने डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल जैसे ख्याति प्राप्त विद्वान् के निर्देशन में अपना शोध प्रबन्ध तैयार किया था अतः हर दृष्टि से महत्वपूर्ण है। आगे चलकर उन्होंने कहा कि दो भागों में प्रकाशित वह प्रबन्ध डोगरी रिसर्च इन्स्टीच्यूट में विद्यमान है। उनकी प्रेरणा को सिर-माथे रखकर मैंने अपने गाँव सियालना (सुराड़ी) (त० बिलावर, जि० कठुआ) में दो महीने रहते हुए अपने ग्रीष्मावकाशवधि का सदुप्रयोग कृषि शब्दावली एकत्र करने में ही किया। उन दिनों मैंने एक योजना बद्ध ढंग से हल जोतने वाले किसानों के अतिरिक्त तक्षकों, लोहारों, चमारों, कुम्हारों आदि सभी को बारी-बारी मिल कर कृषक जीवन के साथ सम्बन्ध

रखने वाले सभी व्यवसायों की शब्दावली एकत्र की और फिर उसे व्यवस्थित रूप (अक्षर क्रमानुसार) दिया और पृथक-पृथक भागों में बांटा भी, परन्तु ग्रीष्मावकाश समाप्त हो जाने पर जब पुन्छ वापस लौट गया तो शब्द-संग्रह का अग्रिम कार्य स्थगित हो गया। 1964 ई० में जगत् प्रसिद्ध भाषा विद् डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा जी से पत्रव्यवहार करके उनसे उनके चंडीगढ़ निवास में मिलने का समय लेकर 9 सितम्बर 1964 ई० के दिन उनसे मिलकर तथा प्रातः 9 से लेकर 3 बजे सायं तक उस विद्वान् के पास बैठकर उनसे विशेषार्थ रखने वाले शब्दों की व्युत्पत्ति और शोध कार्य के गुर सीखने का सुअवसर प्राप्त किया। उन जैसे विश्व-विख्यात भाषा वैज्ञानिक के सान्निध्य में नौ घण्टे बैठकर ज्ञान प्राप्त करना वास्तव में सौभाग्य की बात थी। स्मरण आता है कि प्रो० शास्त्री जी ने ही मुझे डॉ० वर्मा जी से मिलने का सुझाव दिया था। क्योंकि जब डॉ० वर्मा प्रिन्स ऑफ वेल्स कॉलेज जम्मू से सेवा मुक्त हुए थे तो प्रो० शास्त्री जी उनके स्थान पर नियुक्त हुए थे। स्पष्ट है कि प्रो० शास्त्री जी डॉ० वर्मा जी की गम्भीर एवं प्रगाढ़ विद्वत्ता से खूब परिचित होंगे।

डोगरी संस्था की रजत जयन्ती के आयोजन की डोगरी संस्था ने तैयारियां प्रारम्भ की तो प्रो० शास्त्री जी ने मुझे पत्र लिखकर प्रस्तावित रजत जयन्ती ग्रन्थ के लिए भड्डू-बिलावर और बसोहली का डुग्गर के सांस्कृतिक मान चित्र में योगदान शीर्षक से शोध लेख तैयार करने के लिए कहा। मैंने भी अपनी पूरी लगन और सामर्थ्य के अनुसार परिश्रम करके आलेख तैयार करके प्रो० शास्त्री जी को भेजा तो वह उक्त ग्रन्थ के आलेखों के क्रम में उन्नीसवें स्थान पर सम्मिलित किया गया।

जब में 1978 ई० के अगस्त मास में विश्व विद्यालय अनुदान आयोग का फैलोशिप प्राप्त कर पूना विश्वविद्यालय के संस्कृत प्रगत अध्ययन केन्द्र में पी० एच० डी उपाधि के लिए शोध करने से चला गया तो यद्यपि 1982 ई० के जनवरी मास के अन्त तक के वहाँ आवासकाल में प्रो० शास्त्री जी से पत्र व्यवहार करता रहा और उनके सुझावानुसार डुग्गर की ग्रामीण कृषि शब्दावली पर पी० एच० डी के लिए शोध न करके मैं पूना जाकर किसी अन्य विषय पर शोध करने लगा था, के कारण वह मेरे पर कुछ नाराज भी हो गए थे, परन्तु फिर भी मेरे पत्रों का निरन्तर उत्तर देते रहे। मैं समझता हूँ कि यह उनका सौहार्दपूर्ण उदार भाव ही था। उन दिनों शास्त्री जी जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा एकेडमी के आमन्त्रण पर डोगरी-डोगरी कोश निर्माण योजना के प्रमुख संपादक का कार्यभार सम्भाले हुए थे।

मैं जब जून 1985 ई० में हिन्दी साहित्य मण्डल का प्रधान मनोनीत हुआ तो कॉफी हौस, (अब प्रैसक्लब) जम्मू में आयोजित एक कवि गोष्ठी में अध्यक्ष पद सम्भालने के लिए उन्हें आमन्त्रित करने गया तो वह शीघ्र स्वीकार करके कार्यक्रम में आए और कविगोष्ठी की सम्पन्नता के उपरान्त अपने स्वाभावानुसार भाषण देने के बाद ही घर गए थे। उसके बाद जब 1991 ई० में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की शाखा जम्मू में भी स्थापित हुई तो कुछ समय के बाद वर्धाकार्यालय में मुझे जम्मू-कश्मीर शाखा का संचालक नियुक्त किया तो महिला

कॉलेज परेड में आयोजित एक बहुभाषी कवि गोष्ठी में हमने उन्हें सम्मानित भी किया था।

परन्तु मुझे फिर भी यही अनुभव होता रहा कि शास्त्री जी॰ का मेरे प्रति आत्मीयभाव पहले जैसा नहीं है। न जाने क्या कारण था ? परन्तु इसके बावजूद उनका मेरे प्रति बाह्य-व्यवहार लगभग पूर्ववत् ही था, क्योंकि वह जब भी जहां कहीं भी मिलते थे आपसी रामसत् एवं कुशलक्षेम पूछना आदि सब पूर्ववत् एवं यथावत् ही चलता था। मैं समझता हूँ कि समाज में रहते हुए हम लोगों में इस प्रकार की छोटी-मोटी कटुताएं एवं मधुरताएं आती-जाती ही रहती ही हैं, फिर भी बड़पन एवं हमारे उदार भावों की गरिमा इसी में है कि हम कटुताओं और गलत फहमियों को अपने मन में स्थायीरूप न लेने दें। प्रो० शास्त्री जी तो हमारे लिए सदा पूज्य थे और भविष्य में भी पूज्य ही रहेंगे।

प्रो० रामनाथ शास्त्री के पूर्वज जम्मू-कश्मीर राज्य के जम्मू संभाग के उत्तरान्चल में बसे रियासी नामक नगर जो पहले तहसील मुख्यालय था जब कि अब मण्डल मुख्यालय है के अन्तर्गत माड़ी नामक ग्राम के रहने वाले थे। इनके पिता वैद्य गौरीशंकर अपने प्रदेश में एक माने हुए आयुर्वैदिक वैद्य थे। कहते हैं कि उनका व्यवसाय ही उन्हें परिवार के साथ जम्मू ले आया था। जम्मू में आकर वह कर्ण नगर (वर्तमान नाम) में बस गए थे। शास्त्री जी का जन्म जम्मू में ही 15 अप्रैल 1914 ई० में हुआ था। इनके बड़े भाई श्री विश्वनाथ खजूरिया इनसे लगभग 5 वर्ष बड़े थे और डोगरी के प्रथम एकांकीकार, प्रथम निबन्धकार एवं प्रथम आत्मकथाकार थे। इनके सबसे छोटे भाई नरेन्द्र भी प्रसिद्ध कहानीकार थे।

प्रो० शास्त्री के पिता ने इन्हें आयुर्वैदिक वैद्य बनाने की इच्छा से ही इन्हें संस्कृत भाषा की शिक्षा दिलवाने का निर्णय लिया और तदनुसार इन्हें जम्मू के प्रसिद्ध शिक्षा संस्थान रणवीर हाई स्कूल के परिसर में चल रहे संस्कृत विद्यालय में प्रविष्ट करवा दिया। क्योंकि इन्हें खेलने का भी बड़ा शौक था, अत: पहले अपनी सम-अवस्था के लड़कों के साथ गुल्ली-डण्डा और बड़े होकर फुटबाल खेलने में पर्याप्त सफलता प्राप्त करके एक अच्छे खिलाड़ी कहलाने लगे थे। वहाँ कुछ वर्ष पढ़ने के बाद यह श्री रघुनाथ संस्कृत महाविद्यालय में प्रविष्ट हो गए। वह महाविद्यालय उस समय श्री रघुनाथ मन्दिर परिसर में चल रहा था। वहाँ अध्ययन करके इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की और उसके बाद उसी विश्वविद्यालय से प्रभाकर (हिन्दी) और एम० ए (संस्कृत) परीक्षाएं भी उत्तीर्ण कर लीं। एम०ए० की परीक्षा से लगभग एक वर्ष पहले इनकी पहली पत्नी की आकस्मिक मृत्यु हो जाने से इन्हें जो गहन आघात पहुंचा था उसकी क्षति पूर्ति इनकी एम० ए० परीक्षा के लिए तैयारी एवं बाद में उत्तीर्णता ने पूर्ण कर दी, जैसा कि इन्होंने उस दुखद आघात के बारे में इन पंक्तियों के लेखक को एक बार स्वयं सुनाया था। एम० ए० की परीक्षा का परिणाम घोषित होते ही इनकी नियुक्ति संस्कृत अध्यापक के रूप में जम्मू के प्रसिद्ध राजपूत हाई स्कूल में हो गई और उसके तुरन्त बाद इनका दूसरा विवाह श्रीमती सुशीला के साथ हो गया। सुशीला जी के रूप में इन्हें नि:सन्देह एक सुयोग्या और कुल शीला धर्मपत्नी प्राप्त हुई, जिसके समर्पित भावपूर्ण सेवा भाव और

सहयोग से शास्त्री जी के भाग्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।

1944 ई० में जब प्रिन्स ऑफ वेल्स कॉलेज से विश्व-प्रसिद्ध भाषा शास्त्री डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा सेवा मुक्त हुए तो प्रो० शास्त्री जी की उनके स्थान पर नियुक्ति हो गई। उक्त कॉलेज में अपना पदभार सम्भालने से पहले जब राजपूत हाई स्कूल में इनका विदाई समारोह आयोजित किया गया तो इन्होंने वहां एक ब्लैक बोर्ड पर अपनी स्वरचित कविता की ये पंक्तियां लिखी थीं-

''अलविदा ए कर्म मन अलविदा।
अब दुआ है न लाए यहाँ खुदा।''

प्रिन्स ऑफ वेल्स कॉलेज में अध्यापन कार्य करने के साथ-साथ इन्होंने जब कॉलेज की पत्रिका 'तवी' के हिन्दी विभाग के सम्पादक का कार्यभार संभाला तो इन्हें वेदपाल दीप, केहरिसिंह मधुकर एवं यश शर्मा जैसे योग्य छात्र मिले जो हिन्दी में अच्छे स्तर की कविताएं और गीत लिखते थे। परिणामत: प्रो० शास्त्री ऐसे छात्रों से बड़े प्रसन्न थे। इसी बीच एक दिन इनके मन में अचानक यह विचार उभरा कि -''डोगरी क्योंकि डुग्गर की जनता की बड़ी मधुर भाषा है, उसे हम डोगरे ही क्यों उपेक्षित कर उस में कविताएं, कहानियां आदि रचने में झिझकते हैं जब कि महाराजा रणजीत देव के राज्यकाल (1719-1781 ई०) में उनके कुछ समय के लिए दरबारी कवि के रूप में रहे भड्डू निवासी देवी दत्त भड़वाल (कवि दत्तू नाम से अधिक प्रसिद्ध) ने ब्रज भाषा में महाभारत के 67 अध्यायों वाले द्रोण पर्व का 'वीर विलास' शीर्षक से ब्रजभाषा में अनुवाद और ब्रजराज पंचासिका शीर्षक से एक खण्डकाव्य की भी उसी भाषा में रचना करके अपनी मातृ भाषा डोगरी में भी कुछ पद रचे थे, जिनमें से आज केवल दो ही उपलब्ध हैं। उसके बाद लाला रामधन और पं० गंगा राम ने भी कुछ पद मातृ भाषा डोगरी में रचे थे। फिर पर्याप्त अन्तराल के बाद महाराज रणवीर सिंह के राज्य काल में महाराजा के आदेश से डोगरी लिपि की वर्णमाला में आवश्यक सुधार करके डोगरी को परशियन के साथ-साथ कार्यालयीय भाषा स्वीकार करके इसमें दूसरी भाषाओं से कुछ अनुवाद भी करवाए, जिनमें 'लीलावती' शीर्षक से संस्कृत में रचित गणित पुस्तक प्रमुख है, तथा कुछ मौलिक रचनाएं भी तैयार करवाई।

मेहता मथरा दास (1858-1926 ई०), सन्तराम शास्त्री (1868-1945 ई०), कांगड़ा निवासी प्हाड़ी गांधी उपाधि से प्रसिद्ध बाबा कांशीराम (1882-1943 ई०) आदि कई कवियों ने भी कई-कई पद रचे। तीस के दशक में पं० हरदत्त शास्त्री ने ''अदालती दा धन्दा'' जैसी प्रगतिवादी कविताएं रची थीं और विश्वनाथ खजूरिया ने 1935 ई० 'अछूत' एकांकी की रचना की थी और उन्हीं दिनों प्रो० गौरी शंकर ने राजकीय कॉलेज लाहौर में अध्यापन कार्य करते हुए श्रीमद्भगवतगीता का डोगरी गद्य में अनुवाद किया था और 1943 ई० दीनू भाई पन्त ने गुत्तलूं (डोगरी में हास्य-व्यंग्य की कविता) रच कर डोगरी कविता को घर-घर में प्रसिद्ध

करने का सराहनीय प्रयत्न किया था, परन्तु फिर भी देश की शेष प्रादेशिक भाषाओं में जिस तीव्र गति से साहित्य रचा जा रहा है एवं उनका अपने-अपने प्रदेशों में बड़ा आदरणीय स्थान है, वैसा डोगरी को जम्मू संभाग (डुग्गर प्रदेश) में अब तक न तो वह आदरभाव प्राप्त है और न ही इसमें बहुआयामी साहित्य उतनी गति से रचा जा रहा है।'' बस, यही प्रो० शास्त्री जी की मन-बुद्धि में जब बार-बार कौंधने लगा तो उन्होंने डोगरी के उत्थान के लिए कुछ व्यावहारिक पग उठाने का निश्चय कर लिया। परिणाम स्वरूप 1944 ई० में बसन्त पच्चमी के शुभदिन पर इन्होंने श्री धर्म चन्द्र प्रशान्त, पं० सन्तराम बडू (प्रसिद्ध चित्रकार), श्री नारायण मिश्र आदि के साथ मिलकर डोगरी संस्था की स्थापना कर दी थी।

प्रो० शास्त्री जी के संयोजन में सारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और पं० संसार चन्द वडू संस्था के प्रथम प्रधान और स्वयं शास्त्री जी मन्त्री मनोनीत हुए बस, फिर क्या था जब डोगरी भाषा और इसके साहित्य के विकास के लिए एक मंच भी तैयार हो गया और साथ ही इन्हें अपने समान समर्पित साधक एवं सहयोगी भी मिल गए तो यह डोगरी आन्दोलन के एक सशक्त एवं प्रबुद्ध पुरोद्या बनकर योजना बद्ध ढंग से उस आन्दोलन को चलाने लगे और कहानीकार भगवत् प्रसाद साठे, दीनू भाई पन्त, शिवनाथ और युवा हिन्दी कवि वेद पाल दीप, केहरि सिंह और यश शर्मा आदि भी डोगरी संस्था के साथ जुड़ गए। जब इन जैसे कर्मठ व्यक्तियों का कुशल नेतृत्व प्राप्त हो गया तो स्वाभाविक था कि डोगरी के उद्धार के लिए धीरे-धीरे एक आन्दोलन उभरने लगा। परिणामत: ऊपर उल्लिखित हिन्दी के युवा कवि डोगरी के पुन: जागरण आन्दोलन में सम्मिलित होकर डोगरी में भी कविता-रचना करने लगे। इस प्रकार प्रो० शास्त्री डोगरी भाषा और इसके साहित्यिक विकास के पुरोधा एवं पुनरूद्धारक होने के कारण आधुनिक हिन्दी के पुनरूद्धारक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समान डोगरी के भारतेन्दु कहलाने लगे। वह स्वयं भी पहले हिन्दी कहानियां और निबन्ध लिखते थे, उसके बाद डोगरी में भी लिखने लगे।

1947 ई० में जब भगवत्प्रसाद साठे का पहला कहानी संग्रह-''पैह्ला फुल्ल'' प्रकाशित हुआ तो डोगरी में कथा साहित्य के लेखन का भी श्रीगणेश हुआ। स्पष्ट है कि डोगरी संस्था की स्थापना से प्रेरणा प्राप्त करके जो डोगरी भाषा और इसके साहित्य की समृद्धि के लिए एक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ उसी से धीरे-धीरे डोगरी में हर विधा की रचनाओं के लिए एक सुखद वातावरण तैयार हुआ था, जिसके लिए हम प्रमुख श्रेय प्रो० रामनाथ शास्त्री जी के कुशल नेतृत्व को ही देते हैं। उनका इतना प्रभावी प्रेरक स्वभाव था कि जिसे भी वह डोगरी संस्था का सदस्य बन कर लिखने की प्रेरणा देते उसे नत-मस्तक होकर स्वीकार करना ही पड़ता था। इसीलिए डोगरी कविओं और साहित्यकारों की धीरे-धीरे संख्या भी बढ़ती गई और विविध प्रकार का साहित्य भी रचा जाने लगा।

1969 ई० में जब साहित्य अकादमी, दिल्ली से डोगरी को एक साहित्यिक भाषा के रूप में मान्यता देने की प्रार्थना की गई तो तत्कालीन प्रधान प्रख्यात भाषा वैज्ञानिक डॉ० सुनीति चैटर्जी ने अस्वीकार कर दिया, परन्तु डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा जी चैटर्जी के परम मित्र थे, के द्वारा

अनुशंसा करने पर डॉ० चैटर्जी तुरन्त मान गए और मान्यता के लिए अपनी स्वीकृति दे दी। जब जम्मू में यह सुखद समाचार पहुँचा तो सभी डोगरी प्रेमियों को तो प्रसन्नता हुई थी, परन्तु प्रो० शास्त्री जी को आपार हर्ष हुआ था। इससे पहले 1964 ई० 1967 ई० तथा 1969 ई० में डोगरी की ये तीन परीक्षाएं क्रमशः तिलक, प्रवीण और शिरोमणि जम्मू विश्वविद्यालय द्वारा चालू कर दी गई थीं। इन्हें चालू करवाने में शास्त्री जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। शास्त्री के नेतृत्व में जम्मू नगर तथा हीरा नगर आदि कई स्थानों पर इन परीक्षाओं के लिए परीक्षार्थियों को तैयार करने के लिए निःशुल्क कक्षाएं भी आयोजित की जाती रही तो स्वाभाविक था कि परीक्षार्थियों की संख्या भी बढ़ती गई थी।

1970 ई० में डोगरी संस्था ने अपनी रजत जयन्ती समारोह आयोजित किया तो एक रजत जयन्ती ग्रन्थ के प्रकाशन की भी योजना बनाई गई। जिसमें डुग्गर के विभिन्न सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विषयों पर 40 शोध आलेख लिखवा कर सम्मिलित किए गए। उस ग्रन्थ का सम्पादन भी प्रो० शास्त्री ने ही किया था। डोगरी संस्था ने जब 'नमी चेतना' शीर्षक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया तो उसके सम्पादन का दायित्व भी शास्त्री जी ने ही सम्भाला था और 25 वर्षों तक लगातार वही उसका सम्पादन कार्य करते रहे। इससे स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि शास्त्री जी में कितनी कर्मठता और डोगरी के प्रति समर्पण भाव था। अपना निजी लेखन कार्य करना और डोगरी संस्था का मन्त्री पद भी 35 वर्षों तक सम्भालना और पत्रिका के सम्पादन का उत्तरदायित्व भी निभाना, यह सब शास्त्री जी की कर्मठता और डोगरी भाषा और साहित्य के प्रति उनके प्यार का ही प्रमाण है।

1970 ई० में जम्मू-कश्मीर राज्य के उच्च शिक्षा विभाग से सेवा मुक्त होकर यह पाँच वर्षों के बाद 1975 ई० में जम्मू विश्वविद्यालय द्वारा सद्यः संचालित डोगरी रिसर्च केन्द्र में फैलो के रूप में कार्य करने लगे। 1977 ई० में जब जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा-अकेडमी ने डोगरी-डोगरी कोश निर्माण की परियोजना प्रारम्भ की तो इन्हें उसका प्रमुख संपादक का कार्यभार सम्भालने की प्रार्थना की गई जो उन्होंने तुरन्त स्वीकार करके कार्य आरम्भ कर दिया। इनके साथ इनके नेतृत्व में डॉ० जितेन्द्र उधमपुरी (कवि और साहित्यकार) डॉ० शिव राम दीप (डोगरी कवि) पूरे समर्पण भाव से काम करते रहे। परिणामतः 1985 ई० में उक्त कोश छः भागों में प्रकाशित होकर डोगरी भाषी जनता के सामने आया, जिसका सभी ने हृदय से स्वागत किया। 22 दिसम्बर 1983 ई० में जब अटल बिहारी जी के प्रधानमंत्री काल में डोगरी भाषा को भारतीय संविधान के आठवें अनुच्छेद में स्थान प्राप्त हुआ तो प्रो० शास्त्री ने असीम आनन्द अनुभव करते हुए वर्णनातीत सकून की साँस ली थी। उस समय इन्होंने कहा था डोगरी भाषा के भारतीय संविधान के आठवें अनुच्छेद में सम्मिलित हो जाने से डोगरी भाषी लोगों का लम्बा संघर्ष समाप्त हो गया है। इस बारे में श्री मोहन सिंह के नेतृत्व में चलाए गए डोगरी संघर्ष मोर्चा की भूमिका प्रमुख रही। प्रधानमंत्री अटल बिहारी जी ने अपना आश्वासन पूरा किया है। एतदर्थ हम उनके हृदय से अभारी है। यहाँ यह बात भी विशेष रूप

से उल्लेखनीय है कि कर्णनगर में डॉ० कर्ण सिंह से भूमि लेकर डोगरी भवन की निर्माण योजना का काम एवं 1980 ई० विश्वविद्यालय में डोगरी विभाग चालू करने का श्रेय भी मुख्य रूप से प्रो० शास्त्री जी को ही जाता है, जब कि उनके सहयोगी भी इस विषय में उनके साथ-साथ ही रहे। क्योंकि ऐसे काम सभी के सहयोग से ही सिद्ध होते हैं।

निजी लेखन कार्य–

प्रो० रामनाथ शास्त्री ने प्रारम्भ में अपना लेखकीय जीवन हिन्दी कहानियों, निबन्धों और विभिन्न विषयों के आलेख लिखने से आरम्भ किया था। जब इन्हीं की प्रमुख प्रेरणा से डोगरी संस्था की स्थापना की गई तो यह मुख्य रूप से डोगरी में लिखने लग पड़े और धीरे-धीरे इस भाषा में कविताएं, गज़लें और गीतों के अतिरिक्त नाटक, कहानियां लिखने के साथ-साथ अन्य भाषाओं से डोगरी में अनुवाद और सम्पादन-कार्य भी करने लगे, परन्तु डोगरी संस्था के मन्त्री पद का भार भी कई वर्षों तक बड़े उत्तरदायित्व से सम्भाल कर निभाते रहे।

1947 ई० के अगस्त मास की 15 तारीख को जब हमारा देश स्वतन्त्र हुआ तो जम्मू के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सपूत कामरेड धन्वन्तरि भी अंग्रेज़ सरकार की असंख्य प्रताड़नाओं से अपने शरीर को जर्जर करके कारावास से मुक्त होकर अपने काली जन्नी मोहल्ला के निवास-स्थान पर पहुँचे तो प्रो० शास्त्री, पं० संसार चन्द्र बड्डू के साथ उनसे मिलने के लिए जब उनके निवास पर पहुँचे, तो उन्होंने संस्था को अपना आशीर्वाद भी दिया और टिक्करी (उधमपुर) ग्राम में निकट भविष्य में आयोजित की जा रही किसान-कान्फ्रेन्स में किसान शहीद बावा जित्तो के जीवन पर आधारित एक नाटक (डोगरी में) लिखकर मंचित करने की प्रेरणा भी दी। प्रो० शास्त्री ने धन्वन्तरि जी का वह चुनौती भरा आदेश स्वीकार किया और 'बावा जित्तो' नाटक यथा शीघ्र तैयार करके उक्त कान्फ्रेन्स में मंचित भी करवाया, जिस में इन्होंने स्वयं भी एक भूमिका निभाई। उसके बाद इन्होंने राम कुमार अबरोल, दीनू भाई पन्त के साथ मिलकर एक नाटक ''नमा ग्राँ'' शीर्षक से भी लिखा और कई गाँवों में मंचित भी करवाया, जिसकी सभी जगह प्रशंसा हुई अब ''बावा जित्तो'' नाटक तो बलवन्त ठाकुर द्वारा निर्देशित विदेशों में भी प्रसिद्ध हो गया है। इन्होंने इस नाटक को आधुनिक तकनीक से नया रूप दिया है।

प्रो० शास्त्री जी के अन्य-लेखन कार्यों की संवेदनातिका पृष्ठ भूमि–

क्योंकि वह मुख्य रूप से प्रगतिवादी विचारधारा के पोषक थे, अत: डोगरी साहित्य के माध्यम से डुग्गर समाज में नई चेतना जाग्रत करने के प्रबल पक्षधर होने के नाते सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टिओं से डुग्गर समाज में नई सोच और स्वाभिमान उजागर करना चाहते थे। इसीलिए इनकी हर रचना और लेखन में हमें इसी भावना का स्वर सुनाई पड़ता है। भ्रष्टाचार रहित समाज में व्यक्ति-स्वातन्त्रय और व्यवहार शुद्धि तथा मानवीय मूल्यों के सम्मान का उन्होंने सदा समर्थन किया। यही कारण है कि इनके लेखन में सदा भ्रष्ट-तन्त्र, पूंजीवादी, व्यवस्था और भ्रष्ट राजनीति का तीव्र विरोध का चित्रण मिलता है। डोगरी संस्था

में इनके द्वारा पढ़ी गई एक कविता की ये पंक्तियां इस सन्दर्भ में ध्यातव्य हैं–

''जोबन शराबे दी मस्ती
गरीबी च होन्दी गै नेईं।''

इसी प्रकार–एक बार इन्होंने घर में कविता की ये पंक्तियां सुनाई थी–

''गूढ़िया नींदरा सौन्देया
डोगरें दे देसा
जाग, जाग, जाग''

ये भी इनके हृदय की भावभूमि में उठते प्रगतिवादी, तूफान के साक्ष्य की अभिव्यक्ति है।

इनका लेखन कार्य नाटक–

1. बाबा जित्तो–पिछले पृष्ठों में लिख दिया गया।

(i) झाँकदियां किरणां–छः डोगरी एकांकिओं का संग्रह

2. कविकर्म–

(i) धरती दा रिण–विभिन्न विषयों पर रची डोगरी कविताओं का संग्रह।

(ii) तलखियां–डोगरी गज़लों का संग्रह। इसे राज्य की कला, संस्कृति और भाषा अकेडमी ने पुरस्कृत किया था।

3. गद्य रचनाएं–बदनामी दी छाँ–डोगरी की सात कहानियों का संग्रह इसे साहित्य अकादमी, दिल्ली ने 1977 ई० में पुरस्कृत किया था।

4. विविध–कलमकार चरणसिंह–युवा कवि चरण सिंह की आकस्मिक मृत्यु के बाद उसके व्यक्तित्व और कृतित्व का लेखा-जोखा।

डुग्गर के लोक नायक–डुग्गर के इन तीन–मियां डीडो, बाबा जित्तों तथा दाता रणपत के क्रान्तिकारी एवं बलिदानी जीवन वृत्तान्तों का विवरणात्मक परिचय इस रचना को राज्य कला संस्कृति और भाषा अकेडमी ने 1988 ई० में पुरस्कृत किया था।

5. अनुवाद– (क) संस्कृत से–

(i) भर्तृहरि के नीति और वैराग्य शतकों के डोगरी पद्य में अनुवाद।

(ii) शूद्रक के मृच्छकटिकम् का –'मिट्टी दी गड्डी' शीर्षक से अनुवाद। इसे साहित्य

अकादमी दिल्ली ने अपनी अनुवाद-पुरस्कार योजना के आधार पर 1989 ई० में पुरस्कृत किया था।

3. भास के चार नाटक-दूत वाक्य, मध्यम व्यायोग, कर्णभार और दूत घटोत्कच (चारों का भास रंग शीर्षक से संग्रह प्रकाशित)

4. मत्त विलास (हास्य व्यंग्य पर आधारित)

5. भगवदज्युकीयम् - (हास्य व्यंग्य पर आधारित)

इस नाटक में सातवीं शताब्दी के भारत की राजनैतिक और सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण है।

6. छः उपनिषदों का अनुवाद।

हिन्दी के-

(i) धर्मवीर भारती के प्रसिद्ध नाटक 'अन्धायुग' का 'अन्ना युग' शीर्षक से अनुवाद। कुछ अन्य भाषाओं की रचनाओं का हिन्दी के माध्यम से अनुवाद किया।

(i) मूल बंगला की रचनाएं (नाटक) बलिदान, मालिनी और डाकघर तीनों मूलरूप से रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा रचित।

मूल रूसी से अंग्रेजी में अनुचित रचना का शीर्षक से अनुवाद।

(i) पातालवासी

मूल गुजराती की कृति का हिन्दी माध्यम से-

(i) महात्मा गाँधी की आत्म कथा (मेरे सत्य के प्रयोग)

(ii) गीता प्रवचन (मूल ले०, विनोवा भावे)

मूल अंग्रेजी की कृति का अनुवाद :

1. रामायण (मूल ले० चक्रवती राज गोपालाचार्य)

यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि प्रो० शास्त्री की सम्पूर्ण अनूदित रचनाएं मौलिक जैसी ही प्रतीत होती हैं, जो निश्चय ही इनकी प्रतिभा शक्ति की साक्षी हैं।

डोगरी में उपर्युक्त विविध प्रकार की रचनाओं के अतिरिक्त इन्होंने हिन्दी में ये पुस्तकें भी लिखी थीं। 1. ला० ईश्वर दास मींगी 2. केप्टन। दोनों में इन व्यक्तियों के जीवनवृत्तों का परिचय है।

कुछ महत्त्वपूर्ण सम्मान–

1994 ई० में जम्मू विश्वविद्यालय द्वारा सम्माननीय डी० लिट की उपाधि।

1990 ई० में भारत द्वारा 'पद्मश्री' सम्मान।

2001 ई० में साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा उच्चतम सम्मान–'फैलोशिप'

2007 ई० में जम्मू-कश्मीर राज्य सरकार द्वारा जीवन-भर डोगरी भाषा और साहित्य की सेवा के लिए उच्च सम्मान।

8 मार्च 2008 ई० को जम्मू-कश्मीर राज्य के इस महान् साहित्यकार और डोगरी भाषा और साहित्य के उद्धारक होने के कारण जिन्हें डोगरी का भारतेन्दु माना जाता था, की जब मृत्यु हुई तो डोगरी भाषा और साहित्य के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय समापत हो गया। उस समय सम्पूर्ण डोगरी समाज शोक संतप्त हो गया था।